ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 9 कुल पृष्ठ-8 30 जनवरी से 5 फरवरी, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 मा. शु.-04

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर महाशय धर्मचन्द्र आर्य, आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक में किया गया विशेष कार्यक्रम आयोजित

तप और दीक्षा से ही राष्ट्र में बल तथा ओज पैदा होता है

– स्वामी आर्यवेश

भारत के 71वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर महाशय धर्मचन्द्र आर्य, आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक की ओर से विशेष व्याख्यान माला का शुभारम्भ किया गया। इसमें नगर के अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादाई व्याख्यान हुआ। स्वामी जी ने वेद के निम्न मन्त्र –

'भद्रं इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्र बलं ओजश्च जातं तदस्मै देवा उपसन्नमन्तु।' (अथर्ववेद 16.41.1)

की व्याख्या करते हुए राष्ट्र के निर्माण एवं उसे शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए तप और दीक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया। उक्त मन्त्र के भावार्थानुसार कोई भी राष्ट्र शक्ति एवं ओज से ओत–प्रोत तभी हो सकता है जब उस राष्ट्र के नागरिक तप एवं दीक्षा का पालन करते हों। ऐसे राष्ट्र के समक्ष सारी दुनिया नतमस्तक होती है और ऐसा राष्ट्र ही पूरे विश्व का गुरु बन सकता है। तप और दीक्षा पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि तप, आश्रम व्यवस्था एवं दीक्षा, वर्ण व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वामी जी ने बताया कि प्राचीन काल में चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास) तथा चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) पूरे समाज को व्यवस्थित करते थे। चार आश्रम मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसे तपस्वी बनने की प्रेरणा देते थे और अपने आश्रम के दायित्वों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित करते थे। चारों ही आश्रमों में तप और श्रम का विशेष महत्त्व था। ब्रह्मचर्य आश्रम में शारीरिक एवं बौद्धिक उन्नति के लिए प्रत्येक बालक–बालिका को तप एवं परिश्रम का जीवन व्यतीत करना होता था और जब वे तपस्वी एवं विद्वान बनकर समावर्तन संस्कार के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते थे तो उन्हें यही प्रेरणा दी जाती थी कि वे गृहस्थ आश्रम में भी तप एवं श्रम को अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बनाकर चलें। तपस्वी व्यक्ति के लिए संयम, सदाचार एवं धर्म का आचरण आवश्यक होता है। अतः गृहस्थ आश्रम में भी प्रत्येक गृहस्थी को इसे अपनाना आवश्यक है। इसी

प्रकार वानप्रस्थ आश्रम में तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए साधना, स्वाध्याय, परोपकार एवं धर्माचरण को प्रमुखता दी गई है। इसी तरह संन्यास आश्रम में तप के साथ–साथ धर्म के प्रचार–प्रसार एवं मानव मात्र की सेवा के लिए जीवन समर्पित करके अपने इहलोक तथा परलोक को सुखद एवं आनन्दमय बनाने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है।

इस प्रकार जिस राष्ट्र में बच्चे से लेकर वृद्ध तक में आश्रम व्यवस्था का पालन करने की उत्कट इच्छा होती है, वह राष्ट्र तपस्वी लोगों का राष्ट्र बन जाता है। ऐसे तपस्वी लोगों को जब सामाजिक व्यवस्था में चार वर्णों में विभाजित किया जाता है तो यह तपस्वी लोग परस्पर सहअस्तित्व की भावना से मिलकर एक–दूसरे के सुख–दुःख को बांटकर 'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।' की भावना को मूर्त रूप देकर चलते हैं। हजारों कथित जातियों में या मत–सम्प्रदायों में बंटा हुआ समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चार वर्णों में बंटा हुआ समाज संगठित होकर राष्ट्र का निर्माण बखूबी कर सकता है। स्वामी जी ने कहा कि जिस प्रकार हमारे शरीर को यदि चार वर्णों के अनुसार चार भागों में बांटकर देखा जाये तो इन चार भागों से मिलकर ही पूरा शरीर बनता है और इस शरीर में इन चारों भागों का कितना गहरा सम्बन्ध एवं समन्वय है कि यदि इसमें मामूली सा भी विकार आ जाये तो यह शरीर रोगी हो जाता है। शरीर में मस्तिष्क को ब्राह्मण, भुजाओं को क्षत्रिय, उदर को वैश्य तथा पैरों को शूद्र की संज्ञा दी गई है। वैदिक वर्ण व्यवस्था में मस्तिष्क, भुजायें, उदर (पेट) तथा पैर चारों का ही परस्पर समन्वय होना एक स्वस्थ शरीर का स्वरूप बनता है। इसी प्रकार राष्ट्र में जब चारों वर्ण अपने–अपने दायित्व को पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी, तप एवं त्याग से निभाते हैं तो वह राष्ट्र भी ओज एवं बल से ओत–प्रोत हो जाता है। यहां पर यह बात विशेष रूप से समझने की जरूरत है कि जैसे शरीर में पैरों का विशेष महत्त्व है और पूरे शरीर का भार पैर ही लेकर चलते हैं। पैरों के बिना शरीर निष्क्रिय एवं असमर्थ हो जाता है, ठीक इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था में जिस वर्ग को शूद्र कहा गया है उसके बिना पूरा समाज निष्क्रिय एवं असहाय हो जाता है। स्वामी जी ने कहा कि शूद्र कोई जाति नहीं है बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के रूप में वह वर्ग है जो शिक्षा के पहले, दूसरे, तीसरे नम्बर पर नहीं आ पाया किन्तु समाज एवं राष्ट्र के लिए उसकी उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका किसी भी वर्ण से कम नहीं है। न वह त्याज्य है, न वह अछूत है और न ही उसके महत्त्व को कम करके आंका जा सकता है। जिन लोगों को रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण रक्त प्रवाह बन्द होने से शरीर का निचला भाग अर्थात् पैर आदि काम करना छोड़ देते हैं, उन लोगों को जीवनभर चारपाई पर लेटे–लेटे दुःख भोगना पड़ता है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि समाज में चारों वर्णों का सामंजस्य, समन्वय और परस्पर सहयोग स्थापित नहीं होगा तब तक राष्ट्र भी शक्ति सम्पन्न नहीं हो सकता।

शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ईश्वर का सच्चा स्वरूप

– सुरिन्द्र चौधरी

न तस्य प्रतिमा अस्ति। यजुर्वेद 32.3

(तस्य) उस परमेश्वर की (प्रतिमा) मूर्ति या तुलना (न अस्ति) नहीं है।

वर्षों से विद्वानों ने उस निराकार परमेश्वर की खोजें जारी रखी हैं कि –

जिसकी रचना इतनी सुन्दर है,
वो कितना सुंदर होगा, वो कितना सुंदर होगा।

आज अधिकांश मनुष्य ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को समझने में पूर्णतया असक्षम हो चुके हैं क्योंकि वे वेदादि सत्यशास्त्रों के ज्ञान से दिन–प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं। आज का मनुष्य अपनी नादानी के कारण ईश्वर की हंसी का पात्र बन रहा है। ईश्वर कहता है, हे मनुष्य! मैंने वेदादि सत्यशास्त्रों में अनेक उपदेशों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि मैं निराकार हूँ और मुझ निराकार की कोई प्रतिमा नहीं बन सकती है, फिर भी तुम मूर्तियाँ बनाकर मुझे पूजने का नाटक क्यों करते हो?

आज तो मनुष्य इन प्रतिमाओं के आगे धूप–दीप जलाने को ही ईश्वर भक्ति मान रहा है। मनुष्य द्वारा रचित ईश्वर की किसी प्रतिमा में हाथी की सूंड देखने को मिलती है तो किसी में अनेकों हाथ देखने को मिलते हैं। कई–कई प्रतिमाएं तो स्थूलाकार की और अति भद्दी प्रतीत होती हैं। सभी प्रतिमाओं में मनुष्य की मूर्खता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं।

गीतकार ने ईश्वर के साथ–साथ उसके द्वारा रचित इस सृष्टि को सुन्दर और अद्भुत बताया है। ईश्वर सुन्दर होने के साथ–साथ अतिशय ज्ञानवान् और अखंड चेतन सत्तावान् भी है। वह अथाह गुणों का स्वामी है। ईश्वर ने सृष्टि में चींटी जैसे छोटे–छोटे जीवों के साथ हाथी जैसे विशालकाय जीवों की भी रचना की है। सृष्टि में जैसे जीवों के आकार में भिन्नता दिखाई पड़ती है, वैसे जीवों के गुणों में भी कोई न कोई विशेषता अवश्य पाई जाती है। कुत्ते में सूंघने की अद्भुत शक्ति पाई जाती है, बाज में देखने की और चीते में सबसे तेज गति से दौड़ने की विशेष शक्ति पाई जाती है। भिन्न–भिन्न जीवों में अनेकों अद्भुत विशेषताओं के उपरान्त भी ईश्वर ने मनुष्य को सृष्टि में सबसे अधिक ज्ञानवान् और सक्षम बनाकर भेजा है।

ईश्वर ने मनुष्य को स्वयं के बाद सबसे अधिक गुणों का स्वामी तो बनाया ही है, साथ ही वेदों का ज्ञान भी उपलब्ध कराया है। वेदों में निहित ज्ञान जीवनयात्रा के प्रत्येक पड़ाव पर पूर्ण रूप से उपयोगी सिद्ध होते हैं। केवल मनुष्य के पास ही अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों की सुविधा उपलब्ध है। इन्हीं कारणों से मनुष्य ने अनेकों आविष्कारों के द्वारा अपने भौतिक जीवन को तो सुखमय बना लिया है, परन्तु भौतिकता की दौड़ में दौड़ते–दौड़ते वह अध्यात्म जीवन से बहुत ही पिछड़ गया है। मानव जीवन में आध्यात्मिक प्रवृत्ति का महत्त्व दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है, यह एक चिन्ता का विषय है।

आज अधिकांश मनुष्य ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को समझने में पूर्णतया असक्षम हो चुके हैं क्योंकि वे वेदादि सत्यशास्त्रों के ज्ञान से दिन–प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं। आज का मनुष्य अपनी नादानी के कारण ईश्वर की हंसी का पात्र बन रहा है। ईश्वर कहता है, हे मनुष्य! मैंने वेदादि सत्यशास्त्रों में अनेक उपदेशों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि मैं निराकार हूँ और मुझ निराकार की कोई प्रतिमा नहीं बन सकती है, फिर भी तुम मूर्तियाँ बनाकर मुझे पूजने का नाटक क्यों करते हो?

आज तो मनुष्य इन प्रतिमाओं के आगे धूप–दीप जलाने को ही ईश्वर भक्ति मान रहा है। मनुष्य द्वारा रचित ईश्वर की किसी प्रतिमा में हाथी की सूंड देखने को मिलती है तो किसी में अनेकों हाथ देखने को मिलते हैं। कई–कई प्रतिमाएं तो स्थूलाकार की और अति भद्दी प्रतीत होती हैं। सभी प्रतिमाओं में मनुष्य की मूर्खता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं।

मूर्खता की पराकाष्ठा तब अधिक मात्रा में चमकती है जब मनुष्य प्रतिवर्ष 'गणेश चतुर्थी', 'दुर्गा पूजा' जैसे उत्सवों के अवसर पर ईश्वर के तथाकथित स्वरूप की नवरचित जड़ प्रतिमाओं का विसर्जन करके, जलस्रोतों को दूषित कर अपनी पीठ खुद ही थपथपाता है। अशिक्षित वर्ग के साथ–साथ शिक्षित वर्ग भी मूर्ति विसर्जन करता है और इससे होने वाली पर्यावरण की हानि से बेखबर रहता है।

चिन्तन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि जब कभी पहली बार किसी ने गलती से ईश्वर के जड़ स्वरूप की रचना की होगी, तब उसने भूल–सुधार के उद्देश्य से मूर्ति विसर्जन किया होगा क्योंकि उसकी रचना को समाज में स्वीकृति नहीं मिली होगी। कालांतर में भूल–सुधार के उद्देश्य से प्रारम्भ हुए मूर्ति विसर्जन को समाज से स्वीकृति तो मिल ही गई, साथ ही ईश्वर की जड़ प्रतिमाओं की रचनाओं को इतना बढ़ावा मिला कि अब इस भूल का सुधार होना असंभव प्रतीत होता है क्योंकि समाज के नन्हें–मुन्ने कर्णधार भी बचपन से ही परिवार के बड़े–बुजुर्गों को जड़ प्रतिमाओं के आगे नतमस्तक होते देख जड़ प्रतिमाओं को ही वास्तविक ईश्वर मानने लगे हैं।

ईश्वर मनुष्य पर इसलिए हंस रहा है कि 'जिसे मैंने बनाया है वही मुझे बना रहा है!' पिता पुत्र को जन्म देता है। पुत्र पिता का सहारा बन सकता है, पुत्र पिता का अनुयायी बन सकता है, उसका जन्मदाता नहीं बन सकता है। पुत्र पिता के गुणों को धारण कर, पिता की श्रद्धा भाव से सेवा करते हुए उसका आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है। पुत्र पिता की आज्ञा का पालन कर अपना जीवन सफल बना सकता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी ईश्वर के गुणों को धारण करके जीवन सफल बनाते हुए जन्म–मृत्यु के बंधन से छूटने का प्रयास करना चाहिए।

जड़ पदार्थों की पूजा करते–करते मनुष्य की बुद्धि जड़ हो चुकी है। इसी बुद्धि की जड़ता के कारण मनुष्य जड़ प्रतिमाओं का आभूषणों से श्रृंगार कर रहा है। छप्पन भोग से प्रतिमाओं को भोग लगा कर अपनी मूर्खता को प्रमाणित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। हद तो तब हो जाती है जब मनुष्य सर्दियों में इन जड़ प्रतिमाओं को दुशालों या अन्य गर्म वस्त्रों से ऐसे ढकता है जैसे इनके अभाव में उनके अराध्य को ठंड लग जायेगी। आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सब करते समय मनुष्य उन सब जरूरतमंदों को नजर अंदाज कर देता है जो भूख से तड़प–तड़प कर या सर्दी से ठिठुर–ठिठुर कर जान गंवाने को विवश हो रहे हैं।

मुंडकोपनिषद् के निम्नलिखित श्लोक में स्पष्ट है कि ईश्वर सम्पूर्ण प्राणियों के अन्दर आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित है –

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः।

वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा। मुंडकोपनिषद् 2.1.3

अर्थ :– ईश्वर का मस्तिष्क अग्नि है, अर्थात्, सृष्टि की सारी तेजस्क्रियता ही ईश्वर के मस्तिष्क का अनुभव करा रही है। ईश्वर के दो नेत्र सूर्य और चन्द्रमा है। दस दिशाएं ईश्वर के दो कान हैं, अर्थात्, ईश्वर को किसी भी दिशा से पुकारें वह अवश्य सुनने वाला है। वेदों के उपदेश ईश्वर की वाक् शक्ति है। प्राणियों के शरीर के अन्दर में प्रवेश करने वाली वायु ईश्वर की प्राणवायु है। समस्त विश्व, लोक–लोकान्तर ईश्वर का हृदय है। उसी परमेश्वर के दोनों पैरों से पृथिवी समा जाती है, क्योंकि वह कण–कण में विद्यमान है। ईश्वर निश्चय ही सम्पूर्ण प्राणियों के अन्दर सदा आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित है।

अतः सभी प्राणियों की सेवा करना अर्थात् उन्हें ईश्वर का स्वरूप मानकर उनके दुःखों को दूर करने का यथासंभव प्रयास करना ही ईश्वर सेवा है।

ऋषि श्रुत ने बालकपन में सोच लिया था कि उसे ईश्वर से मिलना है। श्रुत ने सुन रखा था कि ईश्वर कहीं दूर रहता है, इसलिए वह मात्र मांच वर्ष की आयु में ही गठरी में दैनिक आवश्यकताओं का सामान बांध कर ईश्वर से मिलने के लिए चल पड़ा। अभी वह घर से निकल कर जंगल की राह पर पहुंचा ही था कि उसे एक वृद्धा दिखाई दी, जो एक पत्थर पर बैठकर कबूतरों को निहार रही थी। श्रुत उस महिला के पास गया और उसके साथ ही उसी पत्थर पर बैठ गया। कुछ देर वहीं बैठने के उपरान्त श्रुत अपने साथ लाई गठरी में से खाद्य पदार्थ खाने लगा। वृद्ध महिला श्रुत को ध्यान से देख रही थी। श्रुत को लगा कि शायद महिला भूखी है, इसलिए श्रुत ने गठरी में से कुछ खाद्य पदार्थ उस वृद्ध महिला की ओर बढ़ा दिए। वृद्धा के चेहरे पर अद्भुत मुस्कान फैल गई। श्रुत को लगा कि उसने सबसे हसीन मुस्कान देखी हो! हसीन मुस्कान को दुबारा देखने के उद्देश्य से श्रुत ने कुछ और खाद्य पदार्थ महिला की ओर बढ़ा दिए। यह सिलसिला दोपहर तक चलता रहा।

दोपहर में श्रुत थक गया और उठ कर वापस घर की ओर चल दिया। घर जाकर उसने माँ को बताया कि वह आज ईश्वर से मिलकर आया है और उसकी मुस्कान दुनिया में सबसे खूबसूरत है। श्रुत के चेहरे पर अभूतपूर्व शांति देखकर माँ आश्चर्यचकित थी। दूसरी ओर वृद्धा भी अपने घर देर से पहुंची तो बेटे ने वृद्धा से देरी की वजह पूछी। वृद्धा ने कहा कि आज मेरी मुलाकात ईश्वर से हुई थी। वह मेरी उम्मीद से काफी कम उम्र का था।

ऋग्वेद का निम्नलिखित मंत्र भी इसी आशय की पुष्टि करता है –

प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी। ऋग्वेद 4.25.5

अर्थ :– ईश्वर का प्यारा वह होता है जो सदा अच्छे काम करने वाला है। जो मननशील अथवा विचारशील है वह परमेश्वर का प्यारा होता है। जो उत्तम रीति से सब प्राणियों की रक्षा करने वाला होता है और स्वयं शांतियुक्त होकर शांति का प्रसार करने वाला होता है, वह भी ईश्वर का प्यारा होता है – फिर वह चाहे किसी भी देश व स्थान का हो।

ईश्वर की हंसी रुकने का नाम ही नहीं लेती है जब मनुष्य इन जड़ प्रतिमाओं के सम्मुख नतमस्तक होकर कहता है कि – 'हे ईश्वर! मेरा या मेरे परिवार का अमुक कार्य पूर्ण करा दो, मुझे यह सफलता प्राप्त करा दो, मैं सवा लाख रुपये का प्रसाद बांटूंगा, मैं किसी विशेष मंदिर में पूजा करूंगा, विशेष दरगाह पर माथा टेकने जाऊँगा।

मनुष्य यह सब करते हुए भूल जाता है कि कोई भी कार्य केवल और केवल पुरुषार्थ करने से ही सम्पन्न होता है।

अरे मनुष्य! तू ना बन नादान,
समझ कर वेदों का सर्व ज्ञान।
संवार ले अपना यहीं जीवन,
फिर न मिलेगा अनमोल वतन।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से सभा कार्यालय "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

शिक्षा क्यों, शिक्षा क्या?

– सत्य प्रकाश भारत

मानव की आने वाली पीढ़ी को सही समझ और सही दिशा देने के लिए ताकि वह बड़ा होकर स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ पूरकता और खुशहाली के साथ जी सके। भूख, भय, भ्रष्टाचार से मुक्त होकर जी सके, विश्वास, सम्मान, स्नेह, प्रेम के साथ जी सके। अब यदि पढ़–लिखकर कोई व्यक्ति ऐसा जी पा रहा है तो वह अच्छा इंसान है, वह वास्तव में सफल, खुशहाल व कामयाब और मानव कहलाने का अधिकारी व आने वाली पीढ़ी का आदर्श? अन्यथा उसके पास सूचनाएँ हैं, डिग्रियाँ हैं और मशीन के माफिक उसका जीवन है। इंसान तो नहीं बना, हाँ मशीन जरूर बन गया और भ्रमित अवस्था में है जो समाज व प्रकृति का विनाश ही करेगा, जैसा कि आज चारों ओर दिख रहा है।

हम बच्चों को स्कूल भेजते हैं, हम बच्चों को पढ़ाते हैं या हम पढ़ते हैं कभी सोचा क्यों? पूछ लो किसी भी अभिभावक से, अध्यापक से या विद्यार्थी से, उत्तर आयेगा – अच्छा इंसान बनने के लिए ताकि सभी की खुशहाली के लिए, खुशहाल जीवन जी सके। भावना यह ठीक है परन्तु पूछ लो किसी से, अच्छे इंसान का मतलब क्या? कैसा आचरण, कर्म, जीवन जीने वाले को कहेंगे अच्छा इंसान? शायद उत्तर मिलना मुश्किल हो जाये।

मित्रों! हम चाहते हैं कि शिक्षा प्राप्त करके हम अच्छे इंसान बनें, खुशहाल जीवन जीयें परन्तु जब अच्छे इंसान की परिभाषा ही नहीं पता तो बनोगे कैसे? हाँ, अच्छे इंसान से मतलब, अच्छी नौकरी यानि बड़े पैकेज वाली नौकरी, उसमें से हम थोड़ा पैसा गरीब व्यक्तियों के विकास में लगा दें, बेईमानी ना करें, झूठ ना बोले, कानून का पालन करें आदि परिभाषाएँ निकल कर आती हैं। सवाल है, इससे अच्छे व्यक्ति की परिभाषा परिभाषित होती है क्या?

मान लो, एक बच्चा बचपन से पूरी मेहनत से पढ़कर अच्छे नम्बरों से पास हुआ, बड़े पैकेज वाली नौकरी भी मिल गयी, शादी भी हो गई, बाल–बच्चे भी हो गये, परिवार में मिलजुलकर रहता है, बच्चों को प्यार से रखता है, अपनी तनख्वाह में से 25 प्रतिशत गरीबों को भी देता है, तो वह अच्छा व्यक्ति है ना? सब कहेंगे ठीक। पर मै। शायद सन्तुष्ट नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति प्रकृति व समाज से ले ज्यादा रहा है, दे बहुत कम रहा है। उसकी जीवनशैली के कारण पर्यावरण को भी खतरा हो गया है। हवा, पानी, भोजन जहरीला हो गया जिस कारण से दुनिया में तनाव, भय, भ्रष्टाचार, बीमारी व युद्ध भी बढ़े हैं क्योंकि अच्छे इंसान की परिभाषा है कि वो सबके लिए आदर्श बने, अनुकरणीय बने परन्तु आज का यह अच्छा इंसान अनुकरणीय बन ही नहीं सकता। जहाँ उसे लाख–दो–लाख से लेकर पांच लाख महीने तक की आय है, वहीं करोड़ों लोगों के पास जिन्दगी में भी 5 लाख देखने की व्यवस्था नहीं। इस प्रकार यह अच्छा व्यक्ति करोड़ों लोगों के जीवन में निराशा पैदा करता है। यह व्यक्ति लेता ही लेता है, देता बहुत कम है। विचार करो, दुनिया को देने वाला व्यक्ति बड़ा होगा या दुनिया को लूटने वाला, दुनिया को भोगने वाला?

आज का यह अच्छा आदमी, आज का यह डिग्रीधारी, पढ़ा–लिखा व्यक्ति, आज का यह विकसित आदमी, लाखों व्यक्तियों के हिस्से पर कब्जा करे बैठा है और लाखों व्यक्तियों के हिस्से के संसाधन अकेला भोग रहा है। समाज में गहरी आर्थिक विषमता का कारण बन गया है। जिसके कारण करोड़ो लोग पशु से भी बदतर भय और अभाव का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, तनाव व अविश्वास का जीवन जीने को मजबूर है जबकि प्रकृति में संसाधन निश्चित है, प्रकृति में व्यवस्था भी निश्चित है परन्तु जब मुट्ठीभर लोग सारे संसाधनों पर कब्जा कर लेंगे तब अव्यवस्था तो फैलेगी ही। कहीं वर्तमान की अव्यवस्था का कारण तो नहीं बन गया अच्छा आदमी?

शिक्षा क्यों? सवाल यह है। मेरी समझ कहती है कि शिक्षा की जरूरत मानव के बच्चों को ही है, पशु–पक्षी को नहीं क्योंकि पशु–पक्षी वंश अनुषंगी होता है। जैसा आचरण, जैसा कर्म उसके माता–पिता का वैसा आने वाली पीढ़ी का। परन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नहीं। मनुष्य संस्कार अनुषंगी है। जैसे बचपन में संस्कार होंगे, जैसा उसे समझाया या सिखाया जायेगा, वैसा ही वह बनेगा। मनुष्य सोच के हिसाब से जीता है। मनुष्य के पास समझने की, सोच–विचार करने की अद्भुत क्षमता है, मनुष्य के पास सीखने की, कर्म करने की, निर्माण करने की अद्भुत् क्षमता है, बस आवश्यकता है उसकी दिशा ठीक तरफ ले जाने की और ये कार्य हैं आज के अभिभावकों का।

सही दिशा क्या है? एक बच्चा बड़ा होकर सबका सहयोगी बने, खुशहाली का कारण बने। सबका मतलब क्या? ध्यान से देखोगे तब साफ दिखेगा कि चार अवस्थाएँ है, मोटे–मोटे रूप में, अस्तित्व में। पदार्थ है, प्राण है, जीव है तथा ज्ञान है और चार व्यवस्थाएँ बनानी है मानव को। चार है, चार बनानी है। पहली चार अवस्थाएँ पदार्थ, प्राणी, जीव व ज्ञान। दूसरी चार व्यवस्थाएं बनानी है कि मैं अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति के साथ जैसे जीता हूँ? पहली अवस्थाओं को समझना है। दूसरी व्यवस्थाओं को समझ के साथ बनाना है ताकि सबके साथ पूरक, सहयोगी, तालमेल के साथ जी सके, यही शिक्षा का लक्ष्य है। पदार्थ यानि हवा, पानी, धरती, खनिज, ग्रह : गोल, प्राण यानि पेड़–पौधे, जड़ी–बूटियाँ, जीव यानि पशु–पक्षी, ज्ञान यानि मानव। अर्थात् एक बच्चा बड़ा होकर पढ़–लिखकर चारों अवस्थाओं का सहयोगी, पूरक, खुशहाली का कारण बने क्योंकि वह बन सकता है, बनने की क्षमता है, मतलब पढ़–लिखकर मानव, मानव का व मानव प्रकृति का पूरक बने। मानव, मानव का पूरक, सहयोगी मतलब मानव अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति (हवा, पानी, धरती) के साथ जीवना सीख जाये क्योंकि मनुष्य के पास समझने की, निर्माण की क्षमता है।

शिक्षा क्यों? स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्या? अब सवाल उठता है, अपने परिवार, समाज, प्रकृति के साथ जीने की कला, जीने से पहले उनको समझना होगा मानव क्यों, क्या, किसलिए? परिवार क्यों, क्या किसलिए? समाज क्यों, क्या किसलिए? प्रकृति क्यों, क्या किसलिए? प्रकृति में जीव, प्राण, पदार्थ अवस्थाओं को समझना, उनके प्रयोजन को समझना, उनकी भूमिकाओं को समझना, उनके रूप, गुण, स्वभाव व धर्म को समझना, उनके साथ अपने रिश्तों एवं सम्बन्धों को समझना होगा। सम्बन्धों को समझेंगे तो सम्बन्धों में जीयेंगे ना। शिक्षा क्या? मतलब इस अस्तित्व में हर इकाई क्यों, क्या किसलिए? उनका एक–दूसरे के साथ क्या सम्बन्ध है, क्या उपयोगिता है, उसे समझना, जीना, समझाना, आने वाली पीढ़ी को। हम कुदरत की व्यवस्था को समझते नहीं, मानव के प्रयोजन एवं भूमिका को समझते नहीं, बस लग गये कार्य करने। तब दिशाविहीन तो होंगे ही ना। उसी का परिणाम है, चारों तरफ अविश्वास, द्वन्द्व, तनाव, भय, अभाव, युद्ध, आतंक व बढ़ती हत्या व आत्महत्याएं, जो ठीक नहीं हैं।

यहाँ सार यह निकल कर आया कि शिक्षा क्यों? उत्तर है, मानव की आने वाली पीढ़ी को सही समझ और सही दिशा देने के लिए ताकि वह बड़ा होकर स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ पूरकता और खुशहाली के साथ जी सके। भूख, भय, भ्रष्टाचार से मुक्त होकर जी सके, विश्वास, सम्मान, स्नेह, प्रेम के साथ जी सके। अब यदि पढ़–लिखकर कोई व्यक्ति ऐसा जी पा रहा है तो वह अच्छा इंसान है, वह वास्तव में सफल, खुशहाल व कामयाब और मानव कहलाने का अधिकारी व आने वाली पीढ़ी का आदर्श? अन्यथा उसके पास सूचनाएँ हैं, डिग्रियाँ हैं और मशीन के माफिक उसका जीवन है। इंसान तो नहीं बना, हाँ मशीन जरूर बन गया और भ्रमित अवस्था में है जो समाज व प्रकृति का विनाश ही करेगा, जैसा कि आज चारों ओर दिख रहा है।

शिक्षा क्या? जो है, जैसा है, जिस कारण है उसकी सही–सही समझ होना। चारों अवस्थाओं की समझ होना (पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान)। मानव–मानव के बीच रिश्ते की समझ होना, एक–दूसरे के साथ कैसे खुशहाली पूर्वक जीना, उसकी समझ होना, मतलब मानव का मानव के साथ व्यवहार पक्ष, समझदारी का पक्ष और मानव का शेष प्रकृति के साथ कार्य, उत्पादन और कला की समझ को विकसित करना।

ये दोनों बातें होती है तब जाकर स्पष्ट होता है शिक्षा क्यों और शिक्षा क्या? दोनों बातें स्पष्ट हों, अभिभावकों को, अध्यापकों को और धीरे–धीरे बच्चों को। तब कहीं अपने मनुष्य जीवन की सार्थकता को समझेंगे, जीयेंगे और आने वाली पीढ़ी के लिए और ज्यादा खुशहाली का मार्ग बनायेंगे। तभी हम कह सकते है कि शिक्षा का मतलब 'अच्छा इन्सान बनना।'

कोमल जिन्दगी का अभिशाप है नशा

–दीपक कुमार छिल्लर

जब व्यक्ति कुसंगति व बुरे व्यसनों में फंसता है,
बुरे विचार, गलत व्यवहार व बुरे संस्कारों में धंसता है।
काल के जाल ने व्यक्ति पर जब शिकंजा कसा,
कोमल जिन्दगी का अभिशाप बन जाता नशा।
परिवार की सभी जिम्मेदारी पर लगी निराशा,
जब नशे की लत ने पलट दिया व्यक्ति का पासा।
क्या दिन? क्या रात? क्या दोपहर है?
नशा एक जहर है, जिन्दगी पर कहर है।।1।।

तन की हानि, मन की हानि, धन की हानि,
नशे ने खत्म कर दी व्यक्ति की पूरी जवानी।
नशे से भरी जिन्दगी पर परिवार खोता विश्वास,
जीवन उसका बेकार है, बस चल रही है सांस।
अच्छी संगति, संस्कार, अच्छा व्यवहार अपने जीवन में जोड़ो,
नशे की बुरी लत छोड़ो जीवन को सन्मार्ग की ओर मोड़ो।
नशे की लत से ग्रस्त वृच्छिक को तुम मारो!
सत्यार्थ प्रकाश की वैदिक शिक्षा को जीवन में उतारो।।2।।

न बहकना है और न किसी को बहकाना है,
हमें नशा मुक्त जीवन का वचन निभाना है।
जो छूट गए पीछे उन्हें अब आगे लायेंगे।
नशा मुक्त जीवन का नया मार्ग सफल बनायेंगे।
अब अच्छी होगी पहचान और अच्छी होगी छवि,
नशा मुक्त जीवन का प्रण भरो कह रहा है कवि।
नशा छोड़ो! नशा छोड़ो! नशा एक पाप है।
अगर नहीं छोड़ पाये तो जीवन बन जाता अभिशाप है।।3।।

– म. नं.–1022, ग्राम सभा कालोनी, सरदार पटेल झील के पास, पूठकलां, दिल्ली–110086
मो.:–9990422051

गोरक्षा तथा उसके संवर्द्धन के संकल्प के साथ हर्षोल्लास के साथ मनायें युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस तथा बोधोत्सव

– स्वामी आर्यवेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने वेदों का अनुशीलन किया और उन्हीं के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक इन सभी विषयों पर प्रकाश डालकर उसको सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने अवतार वाद, जन्म पत्र, श्राद्ध इत्यादि का तर्कपूर्ण विरोध करते हुए, समाज को जगाने का कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। आज देश पुनः धार्मिक पाखण्ड भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातपात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण तथा गोहत्या सहित अनेकों कुरीतियों से जकड़ा हुआ है। समय की पुकार है कि समाज में अत्यन्त गहराई तक व्याप्त अन्ध विश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंका जाये और महर्षि का अन्धविश्वास कुसंस्कारों, कुरीतियों को दूर करने का सन्देश घर–घर पहुँचाया जाये।

आज सबसे बड़ी त्रासदी गोमाता की दुर्गति तथा उस पर हो रहे अत्याचार की है। भारतीय संस्कृति में गाय के महत्त्व, प्रतिष्ठा एवं सम्मान को सदैव मान्यता मिलती रही है। एक तरफ चन्द विदेशी मुद्रा के लालच में गोवंश की हत्या एवं गोमांस का निर्यात निर्बाध गति से जारी है वहीं समाज में गोवंश को बेहद तिरस्कार का शिकार भी होना पड़ रहा है। हजारों गाय, बछड़े व सांड़ सड़कों पर दुर्घटनाग्रस्त होते दिखाई देते हैं। जनता के दिलों में गाय के प्रति संवेदना उत्पन्न करने व उसकी रक्षा के लिए प्रेरित करने तथा सरकार को गोहत्या व गोमांस के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु बाध्य करने के लिए एवं समाज में निरन्तर बढ़ती नशाखोरी, युवा पीढ़ी के चारित्रिक पतन व अश्लीलता और कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा धार्मिक अन्धविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 12 फरवरी, 2020 (बुधवार) से 18 फरवरी, 2020 (मंगलवार) महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस तक भव्य जन चेतना यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गोमाता तथा अन्य पशुओं की रक्षार्थ 'गोकरुणानिधि' पुस्तक लिखकर गाय के महत्त्व को विशुद्ध तर्क, अर्थशास्त्र, पर्यावरण और चिकित्सा के आधार पर आध्यात्मिक, राष्ट्रीय और विश्व कल्याण के लिए स्थापित एवं प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा था कि एक गाय को मारकर केवल 80 मांसाहारी व्यक्तियों की भूख मिट सकती है, लेकिन एक गाय को बचाकर उसकी 6 पीढ़ियों से 4,10,440 शाकाहारी *व्यक्तियों को एक समय का आहार दिया जा सकता है।* पंचगव्य अर्थात् गाय के दूध, घी, छाछ, गोबर व मूत्र से आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धति के आधार पर पचासों दवायें तैयार की जा सकती हैं। अकेला गोमूत्र ही स्वयं में पूरा दवाखाना है जो लगभग 500 रोगों के निवारण में काम आता है। देशी गाय ही पंचगव्य के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

कैसी विडम्बना है कि भारत में एक हिरण का शिकार करने पर मुकदमा दर्ज होता है, पुलिस सक्रिय होती है लेकिन गोवंश की हत्या होने पर पुलिस एफ.आई.आर. तक दर्ज करने में हिचकिचाती है। आज स्थिति यह है कि देशी गाय की 20 नस्लें तो विलुप्त ही हो चुकी हैं और यही हाल रहा तो गाय एक दुर्लभ प्राणी की श्रेणी में आ जायेगी। जिस प्रकार गोमाता तथा बूढ़े और दूध न देने वाले गोवंश को निर्दयता के साथ बूचड़खानों में काटा जा रहा है। उस गोवंश से प्राप्त केवल गोबर और गोमूत्र से ही अनेकों उत्पादों जैसे मच्छर क्वायल, अगरबत्ती, डिस्टेंपर, साबुन, फेसक्रीम, पूजन लेप, गोमय कण्डे, दंत मंजन, गोबरगैस, कागज, फिनायल, केश तेल आदि अनेकों उपयोगी चीजें तैयार की जा सकती हैं। इन उत्पादों का यदि निर्यात किया जाये तो प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है। इन कुटीर उद्योगों को विकसित व प्रोत्साहित करने से लाखों लोगों को रोजगार मिल सकता है, लेकिन यह तभी होगा जब देश के हजारों वैध–अवैध बूचड़खाने तुरन्त प्रभाव से बन्द किये जायेंगे।

गोहत्या का अर्थ भारतीय परम्परा की हत्या, उसकी संस्कृति की हत्या, उसकी आध्यात्मिकता की हत्या, उसके अहिंसावादी चिन्तन की हत्या तथा व्यापक रूप में ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को चौपट करना है। करोड़ों शिशुओं को इस मंहगाई के युग में दूध, छाछ तथा घी से वंचित करना है। देश की उर्वरा शस्य श्यामला वसुंधरा को बंजर व बांझ बनाना है।

गाय को माँ के समान पूज्य तथा श्रद्धा रखने वाली असंख्य जनता की तरफ से आर्य समाज सरकार से यह माँग करता है कि –

1. सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा एवं संवर्धन के लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
2. गो संवर्धन अभयारण्य स्थापित करके लाखों बछड़ों, बैलों, सांड़ व वृद्ध गायों को संरक्षण दिया जाये।
3. गोपालन के लिए गाय की नस्ल सुधारकर उसे उपयोगी बनाया जाये तथा गाय पालने वाले किसानों को विशेष अनुदान राशि प्रदान करके उत्साहित किया जाये।
4. गाँव में लघु उद्योगों में विशेष रूप से तेल घानी का कोल्हू या अन्य वे लघु उद्योग जिनमें बैलों का उपयोग हो सके वे लघु उद्योग स्थापित किये जायें।
5. गायों के गोबर व गोचर से जैविक खाद एवं कीटनाशक औषधि तैयार की जायें।
6. प्रत्येक गांव में बंजर जमीन पर गोरक्षा एवं गोपालन केन्द्र स्थापित किये जायें।
7. सरकार द्वारा जंगली जानवरों एवं पक्षियों के लिए स्थापित किये जाने वाले राष्ट्रीय पार्कों की तरह गोवंश के लिए भी राष्ट्रीय पार्क बनाये जायें जिनमें उनके लिए पानी, चारा व रहने के लिए स्थान की व्यवस्था की जाये।

आज आवश्यकता इस बात की है कि गोमाता की रक्षा और संवर्द्धन के लिए हम सब कम से कम एक गाय का पालन अवश्य करे। यदि वह अपने घर पर गाय रखने में सक्षम नहीं है तो एक गाय का वर्ष भर का खर्च गोसंवर्द्धन कोष में जमा कराये। सार्वदेशिक सभा राष्ट्रीय स्तर पर गोसंवर्द्धन केन्द्र की स्थापना करेगी जिसके माध्यम से गोरक्षा एवं गोसंवर्द्धन के कार्य को संचालित किया जा सके।

समाज में बढ़ती हुई नशाखोरी एवं अश्लीलता चारित्रिक पतन का मुख्य कारण है। महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न के पीछे शराब एवं अश्लील फिल्में, अश्लील साहित्य, गूगल पर परोसी जा रही अश्ली सामग्री आदि मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं। अतः यह आवश्यक है कि इन सभी बुराईयों के स्रोतों पर सरकार गम्भीरता से विचार करे तथा प्रतिबन्ध लगाये। इन समस्त बुराईयों के विरुद्ध आर्य समाज निरन्तर प्रचार–प्रसार के द्वारा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। आने वाली 12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी, 2020 (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) तक हरियाणा के सोनीपत, रोहतक, जीन्द, कैथल, फतेहाबाद, हिसार व भिवानी आदि जिलों में भव्य जन चेतना यात्रा निकाली जायेगी जिसके दौरान सैकड़ों गांव एवं शहरों में रैलियों, जनसभाओं एवं नुक्कड़ सभाओं के द्वारा जागृति पैदा की जायेगी। समितियों का गठन किया जायेगा और अखबार तथा मीडिया के माध्यम से इन बुराईयों के विरुद्ध आवाज उठाई जायेगी। मैं यात्रा में शामिल होने के लिए सभी आर्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं कार्यकर्ताओं से अपील करता हूँ कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपनी स्वीकृति की सूचना कार्यालय में भिजवायें ताकि वाहन एवं आवास आदि की व्यवस्था ठीक से की जा सके।

नव–जागरण के पुरोधा, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस इस वर्ष फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत् 2076 तदनुसार 18 फरवरी 2020 दिन मंगलवार तथा ऋषि बोधोत्सव 21 फरवरी, 2020 शुक्रवार को पड़ रहा है अतः इन पावन पर्वों को अत्यन्त धूम धाम से समारोह पूर्वक अपने–अपने क्षेत्र में मनाएँ।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्ग दर्शन के ही कारण है। स्वामी जी ने यह ज्ञान हम तक पहुँचाया है इसके लिए हम सब सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारों को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाकर अन्य बन्धुओं को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहें। हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों और अन्ततः समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना।

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के पर्वों के अवसर पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें और यह आयोजन आर्य समाज से बाहर निकल कर जैसे पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर किये जायें तो अत्योत्तम रहेगा। इन बृहद यज्ञों में आर्य सदस्यों, परिवारों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाना चाहिए। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील विद्वान आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन साधारण को वैदिक, आध्यात्मिक तथा श्रेष्ठ विचारों के द्वारा सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके। अपने–अपने क्षेत्र के अलग–अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग–अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं को आयोजित करें।

इस अवसर पर महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भी प्रेरणास्पद हो सकता है। इस कथा से सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकता है।

अत्यन्त आवश्यक है कि महर्षि जन्म दिवस से लेकर ऋषि बोधोत्सव तक आर्य समाज भवनों पर विशेष रोशनी का प्रबन्ध किया जाये तथा प्रत्येक आर्य अपने–अपने घरों को भी दीपावली की तरह से सजायें। प्रत्येक आर्य की छत पर ओ३म् ध्वज अवश्य ही लगा होना चाहिए।

18 फरवरी से 21 फरवरी तक प्रत्येक आर्य समाज से प्रभात फेरी निकाली जानी चाहिए जिसमें आर्यजन परिवार सहित भारी संख्या में प्रातः काल महर्षि तथा प्रभु भक्ति के गीत गाते हुए निकलें, हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भजन गाते हुए, जन समूह अवश्य ही आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। इस अवसर पर महर्षि तथा आर्य समाज से सम्बन्धित लघु साहित्य भी वितरित किया जा सकता है।

अपने–अपने आर्य समाज मंदिरों में या सार्वजनिक स्थानों पर भाषण या चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करके समस्त प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप महर्षि जीवन चरित्र या सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार स्वरूप वितरित करें। आर्य शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार के आयोजन अपने–अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य ही आयोजित करने चाहिए।

क्षेत्रीय जनता को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरित करें।

महर्षि जन्मोत्सव के अवसर पर अपने–अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों, राजनीतिक तथा धार्मिक नेताओं तथा अपने समाज के सदस्यों को शुभ कामना सन्देश भी भेजें तथा पोस्टर भी दीवारों पर चिपकवाएँ।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली–2

गाय बचेगी देश बचेगा

ओ३म्

नशा हटाओ युवा बचाओ

स्वामी दयानन्द सरस्वती

बेटी बचेगी समाज बचेगा

विश्व की समस्त आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

गौहत्या, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता एवं धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध

स्वामी इन्द्रवेश

विशाल जन–चेतना यात्रा

दिनांक 12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी, 2020 (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) तक

प्रारम्भ : दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (आई.टी.आई. चौक) सोनीपत

समापन : अनाज मण्डी, लोहारू जिला–भिवानी, हरियाणा

भारतीय संस्कृति में गाय के महत्व, प्रतिष्ठा एवं सम्मान को सदैव मान्यता मिलती रही है। वैदिक काल से लेकर अंग्रेजी शासन तक गौवंश का महत्व निरन्तर बना रहा, किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् गौवंश का जितना विनाश व अपमान हुआ है उतना पहले कभी नहीं हुआ। एक तरफ गौवंश की हत्या एवं गौमांस का निर्यात निर्बाध गति से जारी है वहीं समाज में गौवंश को बेहद तिरस्कार का शिकार भी होना पड़ रहा है। जो लोग गाय को गौमाता के रूप में मानते हैं वे भी उसे पालने व अपने घर में रखने तक को तैयार नहीं है। हजारों गाय, बछड़े व सांड सड़कों पर दुर्घटना ग्रस्त होते हुए दिखाई देते हैं। पोलीथिन एवं कूड़ा–कचरा खाने को मजबूर गौवंश विनाश के कगार पर है। जनता के दिलों में गाय के प्रति संवेदना उत्पन्न करने व उसकी रक्षा के लिए प्रेरित करने तथा सरकार को गौहत्या व गौमांस के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए बाध्य करने के लिए तथा समाज में निरन्तर बढ़ती नशाखोरी, युवा पीढ़ी के चारित्रिक पतन व अश्लीलता तथा कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा धार्मिक अंधविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 12 फरवरी, 2020 (बुधवार) से 18 फरवरी, 2020 (मंगलवार) महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस तक निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार भव्य जन–चेतना यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यात्रा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी, स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य आदि यात्रा में जन सभाओं को सम्बोधित करेंगे। इनके अतिरिक्त चौ. हरिसिंह सैनी हिसार पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार,श्री विशाल मलिक, प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं युवा उद्यमी, महंत चरणदास जी,भिवानी, महंत राजनाथ योगी,गऊशाला लेघां, श्री इन्द्रजीत आर्य,प्रधान आर्य समाज नरवाना, श्री सुभाष श्योराण, निदेशक इंडस पब्लिक स्कूल जीन्द,आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढोत, इंद्रसिंह आर्य व डॉ. भूपसिंह भिवानी आदि का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। इस महाअभियान में आप सभी का तन–मन–धन से सहयोग चाहिए।

आयोजन समिति

सर्वश्री सज्जन राठी, ऋषिराज शास्त्री, हरपाल आर्य, अजयपाल आर्य, प्रदीप कुमार, विवेकानन्द शास्त्री, अशोक आर्य, आजाद सिंह पूनिया, रामवीर आर्य, रामपाल शास्त्री, प्रिं. आजाद सिंह, सोनीपत, जय प्रकाश आर्य, सोहटी, प्रवीन आर्य, राठधान, मंजीत दहिया, रोहट, राजेन्द्र चहल, बलराम आर्य, गंगाना, डॉ. नरेश, सोनीपत मा. भगवान सिंह, धर्म प्रकाश दहिया, काठमंडी, सोनीपत, राजकुमार दहिया, बिधलान, डॉ.जयवीर मलिक, सुखबीर मलिक आंवली, जितेन्द्र सिंह खर्ब, गुमाना, बलबीर शास्त्री, भैंसवाल, मा. नफेसिंह, रिठाल, नरेन्द्र हुड्डा, धामड़, सुमित आर्य सरपंच, मकड़ौली खुर्द, वीरपाल देशवाल, भैयापुर लाढोत, राजेन्द्र आर्य, राज कुमार आर्य, भैयापुर, राजवीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, रामकुमार आर्य, जिले सिंह सैनी, जिले सिंह कुण्डू, कृष्ण प्रजापत, पं. नरेश आर्य, वीरेन्द्र शास्त्री, दयानन्द शास्त्री, टिटौली, वेद प्रकाश आर्य सिंहपुरा कलां, कै. कपूर सिंह, राजवीर मलिक, राजेन्द्र आर्य, मोखरा, कर्मवीर आर्य, सुदामा आर्य, खरकड़ा, डॉ. सीसराम, बहलबा, नफे सिंह आर्य, डॉ. राजेश आर्य, सत्यवीर आर्य, मनोज पहलवान, नवाब सिंह, प्रो. ऋतुराज, फरमाना, नरेश दौरड, बादल सिंह आर्य, मालवी, वीरेन्द्र लाठर, डॉ. बलवीर सिंह, जुलाना, देवेन्द्र आर्य, बुआना, जसवन्त सिंह, जुलाना, नफेसिंह, धुपसिंह बेनीवाल, गतौली, एडवोकेट रणवीर पहलवान, झमौला, रणवीर राठी, प्रो.धर्मबीर आर्य, मा. जगदीश, कर्ण सिंह रेढू, जींद, मा.सत्यवीर आर्य, जुलानी, सहदेव समर्पित, पृथ्वी सिंह चहल, केवल सिंह जुलानी, डॉ. राजपाल आर्य, सतपाल आर्य सरपंच, विजय आर्य, जाजवान, ओम प्रकाश आर्य, बरसोला, अशोक आर्य, मा. अजीत पाल, सोनू आर्य, कर्मपाल आर्य, संजय पहलवान, खटकड़, जगफूल ढिल्लों, वीरेन्द्र बूरा, रामनिवास बूरा, विकास दलाल, जगबीर पंचाल, बिजेन्द्र आर्य, पवन शर्मा, सुरेश शर्मा, रविन्द्र खटकड़, ऋषिपाल, रघुवीर, घोगड़ियाँ, सूरजमल आर्य, छात्तर, धूलाराम आर्य, थुआ, मनीष चांदपुर, धर्मवीर सरपंच, गोइयां, प्रीतिपाल आर्य, प्रधान, हरिकेश राविश एडवोकेट, मनीराम आर्य, सत्यवीर आर्य, पवन आर्य, प्रधान शहर आर्य समाज, कैथल, मा. श्यामलाल आर्य, मा. अमित गुप्ता, सुरेन्द्र पहलवान, मा. ओम प्रकाश आर्य, महावीर सिंह, जयपाल आर्य, डॉ. होशियार सिंह, किरणपाल, कैथल, विजय आर्य, अश्वनी आर्य, नरेश आर्य, अनिल आर्य, नरवाना, भौम सिंह आर्य, विक्रम आर्य, सोनू आर्य, बिठमड़ा, मोलड़ सिंह, सुरेवाला, मा. नफे सिंह पूनिया, मनुदेव शास्त्री, जयवीर सरपंच, राजली, कर्ण सिंह आर्य, खोखा, बलवन्त सिंह आर्य, न्याणा, डॉ. प्रमोद योगार्थी, नरेन्द्र पाल मिगलानी, सेठ बजरंग लाल गोयल, देवेन्द्र सैनी, दलवीर सिंह आर्य, महेन्द्र सिंह आर्य, सत्य प्रकाश आर्य, सतपाल अग्रवाल, जयवीर सोनी, बलराज मलिक,हिसार, बलजीत आर्य डोभी, राजमल ढाका, धीरणवास, आर्य शमेसर नम्बरदार, लाडवा, अशोक आर्य एडवोकेट, प्रि. धूप सिंह, डॉ. एन.पी. गौड़, जयसिंह जांगड़ा, बहल, सोमवीर आर्य, पाजू, नारायण सिंह एडवोकेट, राजेश आर्य, चैहड़कला, पिताम्बर शर्मा, नरेन्द्र आर्य, संजीत आर्य, सिंघानी, बाबूलाल आर्य, सतनारायण, महेन्द्र आर्य, चन्द्र प्रकाश मलिक, ओम प्रकाश, जुई, आशीष, मा. प्रताप सिंह आर्य, ढिगावा, धर्मवीर शास्त्री, राम अवतार आर्य, लोहारू, राजेश ढांगी, जयनारायण आर्य, आमेवीर आर्य सरपंच, फरटिया, रमेश कौशिक, सोहासड़ा, अशोक भारद्वाज, भिवानी।

बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता : कु. मुकेश आर्या, भिवानी, श्रीमती अलका आर्या, चैहड़कलां, कविता आर्या, जगमति मलिक, रजनी आर्या,प्रधाना कैथल, वीरमति आर्या, जुई, अंजलि आर्या, फरमाना, एकता आर्या, मोखरा, रीमा आर्या, रोहतक, सुमन आर्या, राज कुमारी आर्या, बोहर, पूजा आर्या, महम, मंजू आर्या, मीनू आर्या, निंदाना, मनीषा आर्या, किरण आर्या, इस्माईला, निशा आर्या, रधाना, इन्दू आर्या, सरोज, कमलेश आर्या, रोहतक, कल्याणी आर्या, आर्य नगर।

नोट :– महा अभियान से जुड़ने के लिए सम्पर्क करें।

यात्रा कार्यक्रम

12 फरवरी, 2020

1.	दून व. मा. वि. सोनीपत	9 बजे
2.	ककरोई	
3.	भटगांव	12 बजे
4.	बिधलान	1 बजे
5.	विरथान	
6.	फरमाणा	2 बजे
7.	भैंसवाल	3 बजे
8.	आंवली	4 बजे
9.	गुमाना	5 बजे
10.	रिठाल	6 बजे
11.	धामड़	7 बजे
12.	मकड़ौली खुर्द	7.30 बजे
13.	गुरुकुल लाढ़ौत	8 बजे
14.	टिटौली	9 बजे (रात्रि पड़ाव)

13 फरवरी, 2020

1.	टिटौली	8 बजे
2.	समरगोपालपुर	
3.	निडाना	
4.	मदीना	
5.	मोखरा	9 बजे
6.	खरकड़ा	10 बजे
7.	बहलबा	11 बजे
8.	महम	
9.	भैणी चन्द्रपाल	
10.	फरमाणा	12 बजे
11.	दोरड़	1.30 बजे
12.	मालवी	2.30 बजे
13.	जुलाना	3.30 बजे
14.	गतौली	5 बजे
15.	खटकड़	7 बजे
16.	जीन्द	9 बजे(रात्रि पड़ाव)

14 फरवरी, 2020

1.	आर्य समाज रेलवे स्टेशन	8 बजे
2.	जुलानी	8.30 बजे
3.	जाजवान	9 बजे
4.	बरसोला	
5.	कसुहन	
6.	कालता	
7.	घोगड़ियां	10.30 बजे
8.	कुचराना कलां	
9.	छातर	12.30 बजे
10.	थूआ	
11.	किठाना	
12.	तारागढ़	1.30 बजे
13.	देबण	
14.	तितरम	3 बजे
15.	चंदाना	4 बजे
16.	गुहणा	5 बजे
18.	छौत	
19.	पाडला	7 बजे
20.	कैथल	8.30बजे (रात्रि पड़ाव)

15 फरवरी, 2020

1.	बालू	
2.	बाता	9 बजे
3.	कलायत	
4.	कलरम	10
5.	शिमला	11
6.	नरवाना	12 बजे
7.	दनौदा	
8.	बिठमड़ा	2 बजे
9.	सुरेवाला	
10.	उकलाना	
11.	बरवाला	
12.	बधावड़	
13.	राजली	3.30 बजे
14.	धिराय	4 बजे
15.	खोखा	5 बजे
16.	न्याणा	6 बजे
17.	हिसार	8 बजे (रात्रि पड़ाव)

16 फरवरी, 2020

1.	हिसार	9 से 1 बजे
2.	लाडवा	2 बजे
3.	भगाना	
4.	कंवारी	3 बजे
5.	बालांवास	4 बजे
6.	नलवा	
7.	तोसाम	
8.	मण्डाली	5 बजे
9.	बहल	7 बजे (रात्रि पड़ाव)

17 फरवरी, 2020

1.	बहल	8 बजे
2.	सिरसी	
3.	पाजू	10 बजे
4.	सेहर, ढाणा जोगी	11 बजे
5.	पहाड़ी	1 बजे
6.	मनफरा चौक	2 बजे
7.	ओबरा	
8.	देवराला	3 बजे
9.	कैरू	
10.	चन्दावास	5 बजे
11.	बाबरवास	
12.	झुण्डावास	6 बजे
13.	जूई	7 बजे (रात्रि पड़ाव)

18 फरवरी, 2020

1.	जूई	8 बजे
2.	कुड़ल	
3.	पोकरवास	
4.	ढिगावा मंडी	10.30
4.	सिंघानी	
5.	लोहारू	11 बजे (समापन समारोह)

संयोजक : दीक्षेन्द्र आर्य

आयोजक : युवा निर्माण अभियान, बेटी बचाओ अभियान, स्वामी इन्द्रवेश प्रतिष्ठान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

दूरभाष :– 9354840454, 9468165946, 9416630916, ईमेल :– abhiyangoraksha@gmail.com

धर्म क्या? और धर्म की आवश्यकता क्यों?

– शिवदेव आर्य

जीवन की सफलता सत्यता में है। सत्यता का नाम धर्म है। जीवन की सफलता के लिए अत्यन्त सावधान होकर प्रत्येक कर्म करना पड़ता है, यथा – मैं क्या देखूँ, क्या न देखूँ, क्या सुनूँ, क्या न सुनूँ, क्या जानूँ, क्या न जानूँ, क्या करूँ अथवा क्या न करूँ। क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है, जब मनुष्य किसी भी पदार्थ को देखता है तब उसके मन में उस पदार्थ के प्रति भाव या विचार उत्पन्न होते हैं। क्योंकि यही मनुष्य होने का लक्षण है। इसीलिए निरुक्तकार यास्क ने मनुष्य का निर्वचन करते हुए लिखा है कि

'मनुष्यः कस्मात् मत्वा कर्माणि सीव्यति'

– 2/7/1

अर्थात् मनुष्य तभी मनुष्य है जब वह किसी भी कर्म को चिन्तन तथा मनन पूर्वक करता है। यही मनन की प्रवृत्ति मनुष्यता की परिचायक है अन्यथा मनुष्य भी उस पशु के समान ही है जो केवल देखता है और बिना चिन्तन मनन के विषय में प्रवृत्त हो जाता है।

मनुष्य जब किसी पदार्थ को देखकर कार्य की ओर अग्रसर होता है तब चिन्तन उसको घेर लेता है, ऐसे समय में धर्म बताता है कि आपको किस दिशा में कार्य करना है, यही धर्म की आवश्यकता है। यदि धर्म जीवन में होगा तब जाकर श्रेष्ठ कर्म को कर सकेंगे अथवा पदार्थ का यथायोग्य व्यवहार (कर्म) कर सकेंगे।

काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मद और मोह ये मानव जीवन में मनःस्थिति को दूषित करने वाले हैं। ये षड्रिपु मनुष्य की उन्नति में सर्वाधिक बाधक होते हैं इनका नाश मनुष्य धर्मरूपी अस्त्र से कर सकता है। इन विध्वंसमूलक प्रवृत्तियों को जीतना ही जितेन्द्रियता तथा शूरवीरता कहलाता है। यदि व्यक्ति के अन्दर धर्म नहीं है तो वह इनके वशीभूत होकर स्वयं अपने तथा सामाजिक पतन का कारण बन जाता है। इन पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए परमावश्यक होता है कि व्यक्ति विवेकशील हो और विवेकशील होने के लिए आवश्यक है अच्छे सद् चरित्रवान् मित्रों का संग करें तथा अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

आज हमारी युवा पीढ़ी धर्म के अभाव में पतन की ओर अग्रसरित होती चली जा रही है, ऐसे में लोगों की चिन्तन क्षमता समाप्त हो गयी है। नित्य नये–नये मानवता के ह्रास के कृत्य दिखायी देते हैं, ऐसा क्यों है? क्या हमने कभी विचार व चिन्तन किया है?आज हमारी सोचने की क्षमता इतनी कम क्यों हो गयी है, कि हम धर्म को समझ ही नहीं पा रहे हैं। हम धर्म को एकमात्र कर्मकाण्ड का रूप स्वीकार करते हैं। आज हमें धर्म को स्वयं के अन्दर धारण करना होगा। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध इन दश प्रमुख कर्तव्यों को स्वयं के लिए धारण करने का नाम धर्म बताया है।

धर्म की परिभाषा करने वाले विभिन्न आचार्यों के अपने–अपने मत हैं। संसार में मतवालों ने अपने–अपने धर्म के नाम पर विभिन्न चिन्ह बना लिए हैं, जैसे– कोई केश बढ़ा रहा है, कोई लम्बी दाढ़ी बढ़ाये हुए है, कोई केश व दाढ़ी दोनों ही बढ़ाये हुए है, कोई पाँच शिखाएँ रखे हुए है, कोई मूछ कटाकर दाढ़ी बढ़ा रहा है, कोई चन्दन का तिलक लगाए हुए है, कोई माथे पर अनेक रेखाओं को अंकित किये हुए है और न जाने धर्म के नाम पर क्या–क्या करते हैं। किन्तु ये सभी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं क्योंकि कहा भी है– 'न लिंग धर्मकारणं' अर्थात् धर्म का कारण कोई चिन्ह विशेष नहीं होता है।

यदि हम धर्म को जानना चाहते हैं तो हमें धर्मशास्त्र की इस पंक्ति को समझना होगा–

'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'

जो व्यक्ति धर्म को जानना चाहता है, उसे वेद को प्रमुखता के साथ जानना होगा। धर्म धारण करने का नाम है इसी लिए कहते हैं–

'धारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः'।

जो किसी भी कार्य को करने में सत्य–असत्य का निर्णय कराये, चिन्तन व मनन कराये उसे धर्म कहते हैं। हम धर्म को धारण करते हैं तथा उसको व्यवहार रूप में प्रस्तुत करते हैं।

धर्म ज्ञान के लिए वेद ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वर के सर्वज्ञ होने से उसके ज्ञान में भ्रान्ति अथवा अधूरेपन का लेशमात्र भी निशान नहीं है। वेदज्ञान सृष्टि के आदि का है तथा सभी का मूल है, अतः हम मूल को छोड़ पत्तों अथवा टहनियों को समझने में अपना समय व्यर्थ न करें।

इसीलिए धर्म का ज्ञान और उस पर आचरण मनुष्य के लिए परमावश्यक है, यह हमारी उन्नति व सुख का आधार है। मनुष्य के परम लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि में परमसहायक है।

वेद मनुष्य को आदेश देता है 'मा मृत्योरुदगा वशं'। मनुष्य को प्रतिक्षण सर्तक रहकर अपने चारों ओर फैले मृत्यु के भयंकर पाशों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

उपनिषद् का ऋषि प्रार्थना करता है–'मृत्योर्माऽमृतं गमय' हे प्रभो! मुझे इन मृत्युपाशों से बचाकर अमरता का पथिक बनाइए। इसी रहस्य को स्पष्ट करने के लिए ही धर्मशास्त्रकार घोषणा करता है– धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। अर्थात् जो व्यक्ति धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और जो धर्म को नष्ट करता है, धर्म उसको नष्ट कर देता है। जीवन में हताशा और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता धार्मिक पक्ष के निर्बल होने पर ही आती है। जीवन में अधर्म की वृद्धि ही व्यक्ति को निराश तथा दुर्बल बना देती है अतः धर्म की वृद्धि करके व्यक्ति को सबल व सशक्त रहना चाहिये जिससे अधर्म के कारण क्षीणता न आ सके। धर्म से परस्पर प्रीति व सहानुभूति के भावों की वृद्धि होती है।

आचार्य चाणक्य ने लिखा है–

सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलमिन्द्रियजयः।

अर्थात् सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल–इन्द्रियों को संयम में रखना है। संसार में प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि मैं सुखी रहूँ और सुख की प्राप्ति धर्म के बिना नहीं हो सकती। अतः धर्म का आचरण अवश्य ही करना चाहिये। बिना धर्म को अपनाये कोई भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता।

संसार की कोई भी वस्तु सुख का हेतु हो सकती है परन्तु मरणोत्तर किसी के साथ नहीं जा सकती। शास्त्रकार कहते हैं– 'धर्म एकोऽनुगच्छति' अर्थात् एक धर्म ही मरणोत्तर मनुष्य के साथ जाता है। संस्कृत के नीतिकार कहते हैं–

धनानि भूमौ, पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहे बान्धवाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

अर्थात् समस्त भौतिक धन भूमि में ही गड़ा रह जाता है अथवा आजकल बैंकों में या तिजोरियों में ही धरा रह जाता है और गाय आदि पशु गोशाला में ही बंधे रह जाते हैं। पत्नी घर के द्वार तक ही साथ जाती है और परिवार के भाई–बन्धु व मित्रजन श्मशान तक ही साथ देते हैं। एक मनुष्य का शुभाशुभ कर्म या धर्म ही परलोक में मनुष्य का साथ देता है अर्थात् धर्म के अनुसार ही मनुष्य को परलोक में अच्छी–बुरी योनियों में जाना पड़ता है।

हमे धर्म को यथार्थ में जानकर व्यवहार रूप में स्वयं के लिए धारण करने की आवश्यकता है। धर्म ही एकमात्र हमारा अस्त्र तथा शस्त्र है, जिसका प्रयोग कर हम इहलोक तथा पारलौकिक यात्रा को पूर्ण करें। आओं! हम सब मिलकर धर्म को धारण करें।

– गुरुकुल पौन्धा, देहरादून
मो.–8810005096

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य जी की पुत्रवधु श्रीमती पूर्वा जी को विद्यावाचस्पति/डॉक्टर ऑफ फिलोसफी (पी.एच.डी.) की उपाधि से किया गया सम्मानित

आर्य वीरदल जोधपुर के कर्मठ एवं समर्पित नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य जी के पुत्र श्री राहुल सिंह एक योग्य आर्य वीर नवयुवक हैं। राहुल सिंह की धर्मपत्नी और श्री नारायण सिंह की पुत्रवधु श्रीमती पूर्वा दय्या को राजस्थान के राज्यपाल माननीय श्री कलराज जी मिश्र द्वारा महाराणा प्रताप विश्वविद्यालय, उदयपुर से होम साइंस एक्सटेंशन एजूकेशन में 'विद्यावाचस्पति'/डॉक्टर ऑफ फिलोसफी (पी.एच.डी.) की उपाधि के रूप में विशेष उपलब्धि से सम्मानित किया गया। इसके लिए श्री नारायण सिंह आर्य एवं उनके समस्त परिवार को बधाई एवं श्रीमती पूर्वा जी के उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर महाशय धर्मचन्द्र आर्य, आर्य समाज मानसरोवर कालोनी, रोहतक में किया गया विशेष कार्यक्रम आयोजित

स्वामी आर्यवेश जी ने भारत के गणतन्त्र दिवस को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व बताते हुए कहा कि अभी भी संविधान में व्यक्त की गई समानता एवं समरसता की भावना को हम मूर्त रूप नहीं दे पाये। जातिवाद, सम्प्रदायवाद एवं भाषाई समस्या से समाज बंटा हुआ है, कमजोर है। इसी के साथ–साथ व्यापक रूप से फैल रही नशाखोरी, अश्लीलता एवं नग्नता का खुला प्रचार और प्रचार, महिलाओं पर निरन्तर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न आदि से हमारा समाज एवं राष्ट्र अन्दर से खोखला होता जा रहा है। प्रजातन्त्र में प्राप्त मत के अधिकार का प्रयोग भी आज जाति, मजहब एवं भाषा के सवाल पर किया जाता है। ऐसे में गणतन्त्र के महत्त्व को और अधिक गम्भीरता से समझने की जरूरत है और यदि भारत को पुनः विश्वगुरु का गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करना है तो वेद की आज्ञानुसार वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था को व्यवहारिक रूप से लागू करना होगा। शिक्षा प्रणाली में बच्चों को तप एवं श्रम के साथ जोड़कर उनके जीवन की नींव मजबूत बनानी होगी। तभी हमारे राष्ट्र का सही अर्थों में गणतन्त्र दिवस मनाना सार्थक होगा। इस अवसर पर स्वामी जी का आर्य समाज की ओर से शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की सफलता एवं व्यवस्था में आर्य समाज के संरक्षक श्री नन्दलाल गाँधी, प्रधान श्री सुरेश मित्तल, मंत्री श्री यशपाल भाटिया आदि के अतिरिक्त सर्वश्री गुलशन शाह, आत्म प्रकाश अरोड़ा, सुरेश गांधी, बलदेवराज नारंग आदि महानुभावों ने विशेष योगदान दिया।

फोन स्मार्ट लेकिन दिमाग खाली

– डॉ. हेमंत ठक्कर

हमारे चारों ओर चाहें जितनी भी सूचनाएं मंडराती रहें, लेकिन हमारी स्मृतियों का भंडारण जितना अव्यवस्थित रहता है, सोचने की हमारी क्षमता उतनी ही कम हो जाती है। दरअसल शब्दों और विचारों को लेकर तर्क करने, उन्हें पारिभाषित करने और अभिव्यक्ति देने की हमारी मानसिक क्षमता ही मारी जाती है और सर्च इंजन पर लगातार निर्भरता हमारी इन शक्तियों को प्रायः कुंद करके रख देती है। मनोवैज्ञानिकों ने स्मार्ट फोन की लत के शिकार हो चुके लोगों के बीच एक खास तरह की प्रवृत्ति – 'स्मार्ट' बेकरारी को रेखांकित किया है।

आज स्मार्ट फोनों ने हमारा अपहरण कर लिया है और वे हमारे पूरे अस्तित्व को नियंत्रित करने लगे हैं। यह काम इतने धमकदार ढंग से हुआ है कि यह चमकीली आयताकार चीज हमारा शाश्वत सहचर और विश्वस्त सहयोगी बन गई है – 'हमारी शिक्षक, सचिव, अपने सामने हमारे गुनाह कबूल करवाने वाली और गुरु, सब कुछ एक साथ।' जब कोई सुविधा या सहूलियत हमें अपने अस्तित्व से इस कदर अभिन्न लगने लगे तो उस स्थिति से जुड़े मेडिकल खतरे भी बढ़ जाते हैं। इन खतरों में प्रमुख हैं चीजों का संज्ञान लेने, उन्हें जानने–समझने की क्षमता में कमी और याद रखने तथा विश्लेषण करने के कौशल का संपूर्ण समर्पण। न्यूरॉलजिस्ट (स्नायुविज्ञानी) बताते हैं कि 'गूगल इफेक्ट' के चलते इधर चिंतकों की एक ऐसी पीढ़ी उभर आई है, जो किसी जैविक प्रक्रिया के तहत तथ्य जुटाने और ज्ञान को संयोजित करने की फिक्र नहीं करते।

हमारे चारों ओर चाहें जितनी भी सूचनाएं मंडराती रहें, लेकिन हमारी स्मृतियों का भंडारण जितना अव्यवस्थित रहता है, सोचने की हमारी क्षमता उतनी ही कम हो जाती है। दरअसल शब्दों और विचारों को लेकर तर्क करने, उन्हें पारिभाषित करने और अभिव्यक्ति देने की हमारी मानसिक क्षमता ही मारी जाती है और सर्च इंजन पर लगातार निर्भरता हमारी इन शक्तियों को प्रायः कुंद करके रख देती है। मनोवैज्ञानिकों ने स्मार्ट फोन की लत के शिकार हो चुके लोगों के बीच एक खास तरह की प्रवृत्ति – 'स्मार्ट' बेकरारी को रेखांकित किया है। यह उन लोगों में देखी जाती है, जो अपने फोन से इतना प्यार करते हैं कि इससे जरा भी अलगाव बर्दाश्त नहीं कर पाते। यहां तक कि इसकी मौजूदगी अगर साइलेंट मोड में हो तो भी इस पर कोई अलर्ट आने की स्थिति में आपसी बातचीत या किसी काम में लगे यूजर का ध्यान भंग हो जाता है। जवाब न दे पाने की चिन्ता से उसका कामकाज प्रभावित होने लगता है। दो अलग–अलग अध्ययन इस बारे में हुए। एक टैक्सस यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और सायकॉजिस्ट डॉ. वार्ड तथा वेस्ट कोस्ट में स्थित उनकी टीम द्वारा किया गया और दूसरा मेन यूनिवर्सिटी के शोधार्थियों द्वारा। बौद्धिक तीक्ष्णता परीक्षा पर आधारित इन दोनों अध्ययनों में यह बात उभर कर आई कि जिन स्टूडेंट्स ने परीक्षा के दौरान अपने फोन दूर रख दिए थे, उनका प्रदर्शन उन विद्यार्थियों के मुकाबले एक ग्रेड बेहतर रहा, जिनका फोन उनके पास था। यहां तक देखा गया कि फोन से उनकी नजदीकी जितनी ज्यादा थी, उनकी दिमागी तीक्ष्णता उतनी ही कम दर्ज की जा सकी। चिकित्सकीय दृष्टि से यह भी देखा गया है कि स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करने वाले इसका इस्तेमाल बंद कर दें तो भी उनका स्वास्थ्य खराब होता है। जो मरीज अपना फोन सुन तो लेते हैं लेकिन जवाब देने में अक्षम होते हैं, वे टैकिकार्डिया (धड़कनें तेज होने, नाड़ी तेज चलने की समस्या) के शिकार हो जाते हैं। उनका ब्लड प्रेशर भी अचानक बहुत बढ़ जाता है। डायबिटीज से पीड़ित लोग जब अपने फोन के गुलाम बन जाते हैं, तब शुगर पर उनका कंट्रोल बिगड़ जाता है। लंबे समय तक रिंग अलर्ट और बाइब्रेशन सुनने से मानसिक विचलन बढ़ जाता है और मेटाबोलिज्म (खाना पचाने की प्रक्रिया) बिल्कुल शिथिल हो जाता है। फोन हमारे दिमाग में इतनी मजबूती से अपनी जगह बना लेते हैं कि हमें पता भी नहीं चलता और हमारे हॉर्मोन और नयूरोट्रांसमिटर (स्नायुओं के बीच संदेश ले जाने वाले रसायन) अपनी जैविक लय छोड़कर उल्टा–पुल्टा चलने लगते हैं। विकिरण और सेल फोन के रिश्तों की बात ही छोड़ दीजिए, सबसे बड़ा कैंसर यह है कि स्मार्ट फोन हमारे मन–मस्तिष्क पर चुंबक की तरह चिपक गया है।

इंटरनेट से हमारा लगातार जुड़ाव, तरह–तरह के ऐप्स और पोर्टेबिलिटी मिलकर हमारी जिन्दगी पर राज कर रहे हैं। इससे हमारी नौकरी और रिश्ते प्रभावित हो रहे हैं। जितना भी समय हम जागते हुए बिता रहे हैं, उस पर पूरी तरह इनका कब्जा हो गया है। इस अघोषित विकलांगता के साथ एक खतरनाक विभ्रम भी जुड़ा हुआ है।

पिंजरे में बंद दिमाग बड़ी आसानी से 'बुद्धिमत्ता' का मुगालता भी पाल लेता है। आप दो–चार क्लिक मारकर कोई भी सूचना जुटा सकते हैं। इस तरह आसानी से गलत सूचनाओं के फेरे में पड़ जाने का एक ऐतिहासिक संकट भी पैदा हो गया है। लोग बिना कुछ सोचे–समझे इंटरनेट की खबरों पर विश्वास करके उन्हें फैलाने में जुट जाते हैं, क्योंकि गलत सही का फैसला कर पाने की उनकी क्षमता पहले ही हवा हो चुकी है। वॉल स्ट्रीट जर्नल (इंस्पिरेशनल) से जुड़े निकलस कार के शब्दों को एक बार फिर उधार लूं तो – 'डेटा एक ऐसी स्मृति है, जिसका अपना कोई इतिहास नहीं है।' इस छोटे से गैजेट का दास बन जाने के कारण हमारे सूचना को ज्ञान में बदलने की अपनी क्षमता खो दी है। हम अपना डिवाइस अपग्रेड करने में हमेशा तेजी दिखाते हैं, लेकिन अपने दिमाग को इसी हिसाब से सोचने की इजाजत नहीं देते। नतीजा यह होता है कि हमारी बौद्धिक क्षमता दिनोंदिन कम होती जाती है।

तो अपने दिमाग और शरीर से वादा कीजिए कि जब आप टहलने जायेंगे या जिम में होंगे या गहरे विचार–विमर्श वाली किसी मीटिंग में होंगे, तब नजर बचाकर, या अवचेतन में भी अपने अस्तित्व का केन्द्र बन चुकी इस चीज के साथ नहीं उलझे हुए होंगे। आप स्वयं को उस 'निषिद्ध फल' (चाहे वह ऐपल हो या फिर बेरी) से ज्यादा स्मार्ट साबित करके दिखायेंगे।

स्वादिष्ट, मधुर, तिक्त, सुगन्धित – दालचीनी

दालचीनी वृक्ष की एक छाल है, जो प्रायः दक्षिण भारत के समुद्रतटवर्ती प्रदेशों तथा दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों में इसके वृक्ष पाये जाते हैं। भारत में यह गरम मसाले का एक प्रमुख अंग है। इसकी छाल सुगन्धित तेल आयुर्वेद, एलोपैथी एवं यूनानी दवाइयाँ बनाने में काम आता है।

गुण धर्म – यह स्वादिष्ट, मधुर, तिक्त है, जो पित्त, वायु, तृष्णा, मुखशोध नाशक एवं शरीर के कान्ति को निखारने वाली होती है। दालचीनी का तेल पेट की मंदाग्नि, तनाव और वात विकार हर, आक्षेप, जी मिचलाना और वमन को शांत करने वाला, दंत पीड़ा निवारण, रुके हुए ऋतु स्राव को खोलने वाला होता है।

चाय मसाला :– दालचीनी 20 ग्राम, छोटी इलायची 10 ग्राम, लेमन ग्रास 30 ग्राम का पाउडर बनाकर रख लें; इसे चाय बनाते समय चाय के साथ पकाये बहुत ही स्वादिष्ट चाय बनती है। यह बढ़े हुए कोलेस्ट्राल को कम करने में भी सहायक है। सर्दी के मौसम में लौंग का पाउडर बनाकर मिलायें। यह चाय को स्वादिष्ट बनाने के साथ–साथ स्वास्थ्य के लिए भी हितकर हे। इस पाउडर की आप हर्बल चाय भी बना सकते हैं। एक चम्मच पाउडर को दो कप पानी में पकायें। दो–तीन उबाल आने पर स्वादानुसार दूध व चीनी मिलाकर पियें।

दालचीनी के औषधीय प्रयोग

मंदाग्नि और उदर की वायु में :– पिसी हुई दो चम्मच देशी चीनी में दालचीनी का शुद्ध तेल पांच बूंदें डालकर लाभ होगा।

प्यास बुझाने के लिए :– ज्यादा प्यास लगती हो और शांत न हो, तो 2 ग्राम दालचीनी का चूर्ण खाकर ऊपर से नींबू की शिकंजी बनाकर दिन में 3–4 बार पियें।

गर्मी का सिरदर्द :– पित्त के कुपित होने से गर्मी के मौसम में सिरदर्द होता है, तो 10 बादाम गिरी के तेल में पांच बूंदें दालचीनी तेल को मिलाकर दर्द वाली जगह पर दिन में तीन बार मालिश करें। इसके साथ 4 ग्राम दाल चीनी पाउडर को 100 मिग्रा. गाय के दूध और उतने ही पानी में 24 ग्राम चीनी मिलाकर शरबत बनाकर रोगी को धीरे–धीरे पिलाएं।

मुख के छाले :– मुख के छाले में दालचीनी के 2 ग्राम चूर्ण को 10 ग्राम शहद में मिलाकर मुख के अन्दर लगाएं।

वमन :– पित्त प्रकोप जन्य वमन हो तो दालचीनी का चूर्ण शहद मिलाकर चाटें।

मंदाग्नि, अजीर्ण में :– भोजन के पहले दालचीनी, सोंठ और इलायची पीसकर 1 ग्राम खायें, लाभ होगा।

इन्फ्लुएंजा :– दालचीनी 5 ग्राम लौंग पांच और सोंठ 2 ग्राम तीनों को मोटा कूटकर 400 मिग्रा. जल में पकाएं; आधा बचने पर छान के 30 मिलीग्राम तीन बार पिलायें। इससे बेचैनी, सिर दर्द दूर होकर रोगी को आराम मिलता है।

गले की काग वृद्धि :– प्रातःकाल शौच आदि से निवृत्त होने के बाद दालचीनी छाल को पानी के साथ खूब महीन पीसकर इसका लेप दाहिने हाथ के अंगूठे से काग पर करें तथा मुख खोलकर लार टपकने दें। दो दिन ऐसा करने से काग वृद्धि दूर होती है।

अतिसार :– दालचीनी का चूर्ण 1 ग्राम, राल और बेलगिरी का चूर्ण तीन ग्राम इन तीनों को गुड़ के साथ देने से शूल सहित अतिसार में लाभ होता है।

दस्त बंद करने के लिए :– दालचीनी का चूर्ण और सफेद कत्थे का चूर्ण छह–छह रत्ती लेकर शहद या जल के साथ दिन में दो–तीन बार देने से अतिसार बंद हो जाता है।

कास एवं कफ विकार :– दालचीनी चार माशे, सौंफ दो माशे, मुलेठी चूर्ण चार माशे, मीठा बादाम गिरी एक तोला और शक्कर चार माशे। इन सबको जल के साथ खूब घोंट–पीसकर तीन–तीन रत्ती की गोलियाँ बना लें। दिन–रात में कई बार एक–एक गोली मुख में रखकर चूसते रहें।

प्रतिश्याय (जुकाम) इन्फ्लूएंजा :– दालचीनी के तेल को मिश्री के साथ सेवन करें तथा रूमाल पर इसे डालकर सूंघें।

कफज सिर दर्द :– दालचीनी के तेल को कनपटी व ललाट पर मलें।

दांत दर्द व कृमि :– दालचीनी के तेल का फाहा दांत के गड्ढे में रखने से दर्द दूर होता है और कीड़े मर जाते हैं।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सरस्वती विद्या मंदिर, ग्राम लाखू बुआना, जिला–पानीपत (हरि.) के वार्षिक पारितोषिक समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

सैकड़ों प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को दिये गये पारितोषिक

श्री विजय कुमार मलिक एच.सी.एस. रहे मुख्य अतिथि एवं श्री आजाद सिंह बांगड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे

सरस्वती विद्या मंदिर, ग्राम–लाखू बुआना, जिला–पानीपत, हरियाणा के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में अध्यक्ष के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 25 जनवरी, 2020 को विद्यालय प्रांगण में पधारे। उनका विद्यालय प्रबन्ध समिति की ओर से जोरदार स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता डॉ. देवी सिंह आर्य तथा उनके अन्य सहयोगी सम्मिलित थे। समारोह में स्वामी जी के अतिरिक्त हरियाणा मार्केटिंग बोर्ड के सचिव श्री विजय सिंह मलिक तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय सचिव श्री आजाद सिंह बांगड़ विशेष रूप से पधारे। उनके अतिरिक्त श्री श्याम सिंह खण्ड शिक्षा अधिकारी, श्री खुशीराम जागलान, श्री राम मेहर सिंह ग्लोबल स्कूल पानीपत, श्री रणधीर सिंह इसराना, श्री सुखवीर सिंह सेहरावत व श्री सुरेन्द्र गौड़ आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं संस्थापक श्री राजवीर सिंह मलिक के परिश्रम एवं परिणाम के फलस्वरूप यह विद्यालय पूरे पानीपत जिले में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त है। यहाँ के छात्रों के परीक्षा परिणाम अन्य स्कूलों से अत्यन्त विशेष रहते हैं और सबसे अधिक विशेष बात यह है कि यहाँ शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देने पर भी विशेष बल दिया जाता है। श्री राजवीर सिंह जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रेरणादायक है। उन्होंने अपने उच्च मनोबल द्वारा इस संस्था को न केवल खड़ा किया बल्कि उसका संचालन अत्यन्त कुशलता के साथ कर रहे हैं। श्री राजवीर सिंह जी को बचपन से ही पोलियो रोग के कारण पैरों का सहारा नहीं मिला। एक प्रकार से उनके दोनों पैर न के बराबर हैं। वे खड़े नहीं हो सकते, चल नहीं सकते और यदि चलना भी होता है तो बैठे–बैठे ही हाथों के सहारे से चलते हैं। ऐसी स्थिति में उनके साहस, मनोबल एवं पुरुषार्थ की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। उन्होंने वह कार्य करके दिखाया जो एक पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति नहीं कर पाता।

अपने उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने श्री राजवीर सिंह जी की प्रशंसा करते हुए उनका उत्साहवर्द्धन किया और उनके कार्य को समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी और महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने बच्चों के निर्माण में संस्कारों के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित संस्कार विधि के अनुसार मनुष्य के जीवन में सोलह संस्कार किये जाने चाहिए। इन सोलह संस्कारों में से ग्यारह संस्कार बच्चे की आठ साल की उम्र तक किये जाते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि बच्चे को संस्कारित करने के लिए आठ वर्ष की आयु तक का ही समय विशेष है। उसके पश्चात् बच्चा वाह्य वातावरण से जुड़ता है और समाज में व्याप्त विभिन्न बुराईयाँ उसको प्रभावित करने लगती है और फिर उसको अच्छाई की ओर लाना अत्यन्त कठिन हो जाता है। छोटी आयु में ही बच्चे को हम जैसे संस्कार देंगे उसके मस्तिष्क पर उसकी छाप पड़ेगी और उसके द्वारा ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण होगा। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कारों का महत्त्व नहीं है जिसके कारण वर्तमान शिक्षा अधूरी है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों को सही समय पर संस्कारित किया जाये और उन्हें व्यवहार में आने वाली अच्छाईयों एवं बुराईयों से अवगत कराया जाये।

श्री विजय मलिक ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना संबोधन देते हुए विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि यदि जीवन में ऊँचाईयों को छूना है तो सदैव अपने मनोबल को मजबूत रखो। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति कभी हार नहीं मानता वह एक दिन अवश्य विजय प्राप्त कर लेता है। उन्होंने यह भी बताया कि परीक्षा में नकल करना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है। यदि प्रश्नपत्र की तैयारी नहीं है तो भले ही फेल हो जाओ, लेकिन नकल नहीं करनी है। ऐसा निश्चय सभी विद्यार्थियों को करना चाहिए। श्री विजय सिंह ने धूम्रपान आदि नशे व अन्य कुरीतियों से दूर रहने की भी प्रेरणा दी।

विशिष्ट अतिथि श्री आजाद सिंह बांगड़ ने अपने व्याख्यान से उपस्थित विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को प्रेरित किया कि शिक्षा मनुष्य को सही रूप में मनुष्य बनाती है। किन्तु यह तभी सम्भव है जब शिक्षा के साथ संस्कार भी जुड़े रहें। उन्होंने नैतिक शिक्षा पर विशेष बल देते हुए बच्चों को प्रेरणा दी कि वे अपने जीवन में सात्विक भोजन, सात्विक दिनचर्या एवं सात्विक विचार अपनायें।

कार्यक्रम में बच्चों ने विभिन्न सामाजिक बुराईयों पर विशेष प्रस्तुतियाँ देकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। बच्चों ने नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, प्रदूषण, धार्मिक अन्धविश्वास आदि विषयों पर नाटक प्रस्तुत किये जिन्हें श्रोताओं ने अत्यधिक पसन्द किया। बीच–बीच में देशभक्ति के गीत भी प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

प्रसिद्ध समाजसेवी व आर्य समाज नजफगढ़ के संस्थापक, दानवीर

श्री राव रघुनाथ सिंह आर्य की स्मृति में शांति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का हुआ आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य अखिलेश योगी, पं. भरतलाल शास्त्री, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि हुए सम्मिलित

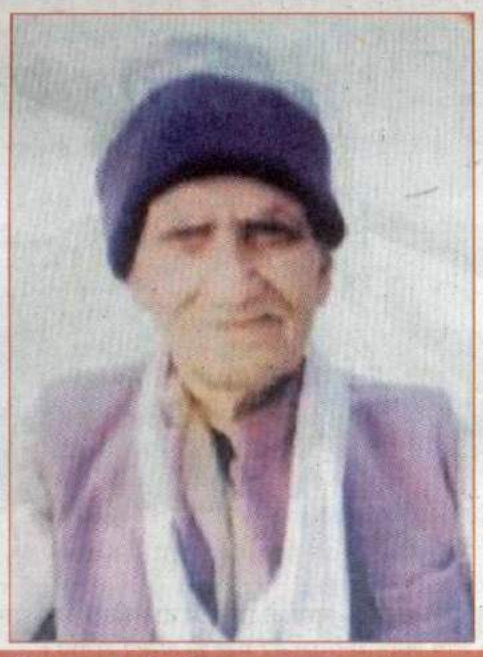

प्रसिद्ध समाजसेवी एवं दानवीर श्री राव रघुनाथ सिंह आर्य जी का गत दिनों 93 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में नजफगढ़ स्थित उनके निवास पर शांति यज्ञ एवं प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, आचार्य अखिलेश योगी हरिद्वार, पं. भरतलाल शास्त्री गुरुग्राम, श्री संतोष कुमार शास्त्री दिल्ली, मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य भजनोपदेशक आदि गणमान्य महानुभाव सम्मिलित हुए। इस अवसर पर सैकड़ों लोगों ने स्व. श्री रघुनाथ सिंह आर्य को यज्ञ में आहुति देकर मौन श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस पूरे आयोजन का संचालन श्री जिले सिंह आर्य ने किया। राव रघुनाथ सिंह आर्य एक प्रतिष्ठित समाजसेवी, प्रसिद्ध दानवीर एवं अत्यन्त सुलझे हुए व्यक्तित्व थे। उन्होंने अनेक गुरुकुलों, आर्य समाजों एवं अन्य संस्थाओं को दिल खोलकर दान दिया तथा आर्य समाज के भामाशाह के रूप में ख्याति प्राप्त की। उनका सम्पर्क व्यापक रूप से पूरे आर्य जगत में था। नजफगढ़ में उन्होंने ही आर्य समाज की स्थापना की थी और उसका अपने पुरुषार्थ एवं सहयोग से निर्माण किया था। भले ही वे 93 वर्ष के हो चुके थे, किन्तु किसी को भी उनकी आयु का अनुमान नहीं था, बल्कि यही माना जाता था कि उनकी आयु 75 या 80 वर्ष की ही होगी। इससे उनके उत्तम स्वास्थ्य का परिचय मिलता है। उन्होंने यादव धर्मशाला नजफगढ़, यादव भवन कुरुक्षेत्र, यादव धर्मशाला हरिद्वार आदि के निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसे समाजसेवी एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के निधन से निःसंदेह समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री रघुनाथ सिंह आर्य जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री आर्य जी सदैव हर आन्दोलन एवं अभियान में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करते थे और समय–समय पर मिलकर उत्साहवर्द्धन किया करते थे। उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान और हंसी बनी रहती थी। वे कभी भी किसी परिस्थिति में विचलित नहीं होते थे। अपने कार्यों के कारण वे सदैव स्मरण किये जायेंगे। सार्वदेशिक सभा की ओर से हम उस दिव्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, पारिवारिक जनों के प्रति सांत्वना प्रकट करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनका अगला जीवन भी उन्नत एवं सेवा के मार्ग पर चलने वाला हो।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।